[9:18 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 401

-आज्ञा चक्र -41-अवचेतन मन -14-अवचेतन मन को जागृत करें ।

नियम 10 - प्रसन्नता

-वर्तमान समय की सब से बड़ी खोज अवचेतन मन की शक्ति है ।

-अवचेतन मन की शक्ति से हम किसी भी मनो कामना की पूर्ति कर सकते है । तथा जब हमारी कोई मनोकामना पूर्ण होती है तो हमें बहुत प्रसन्नता मिलती है ।

-जब हम क्लास में फर्स्ट आते है, जब लोग हमारा सम्मान करते है, जब हम रोग मुक्त हो जाते है, जब हम उंच पद पर पहुँचते है, जब हम दूसरो का भला करते है या सिर्फ सोचते है, जब हम भगवान को याद करते है और हमें मीठा मीठा करेंट सा मिलने लगता है तो हमें बहुत प्रसन्नता होती है ।

-अभी तक प्रसन्नता के लिये बहुत मेहनत करते है , तरह तरह के साधन वा सुख के पदार्थ इक्ठे कर रहे है परंतु परिणाम में वह खुशी नहीं मिलती जिसकी हम कामना करते है ।

-अवचेतन मन की शक्ति से हम किसी भी पराजय पर विजय प्राप्त कर सकते है, किसी भी पदार्थ की पूर्ति कर सकते है, क्योंकि उसके लिये आप का अवचेतन मन आप को ऊर्जा देता है, जब आप नींद में होते है, सैर सपाटे पर होते है, तब भी आप का अवचेतन मन निर्माण करता रहता है ।

- जो व्यक्ति ईश्वर या अवचेतन मन के नियमों में विश्वास करता है और ईश्वरीय नियमों को समझ जाता है वह सदैव प्रसन्न रहता है ।

-आप की प्रसन्नता में बाहरी चीजे बाधक नहीं है ये बाहरी चीजे तो आप के विचारो का परिणाम है ।

-आप का प्रत्येक विचार एक कारण है और नया कारण एक नया परिणाम उत्पन्न करता है । इसलिये सब से पहले खुशी के संकल्पों का चुनाव करो ।

-अगर आप कुत्ते से नफरत करते हो या डरते हो तो वह खूंखार प्रतिक्रिया करता है । दरअसल जानवर आप के अवचेतन मन के कम्पनो को भांप लेता है और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया करता है । इस मामले में इंसान भी कुत्तों, बिल्लियों और अन्य प्राणियों जितने संवेदनशील होते है ।

-हमारी भावनायें क्या है ? वह हमारे बोलने, हमारे कार्यों, हमारे लिखने के ढंग तथा जीवन के बाकी पहलुओं में दिख जाती है ।

-उन सब के प्रति प्रेम, शांति, सहिष्णुता और दयालुता प्रसारित करो, जो आप की आलोचना करते है,आप के बारे में गपछप करते है ।

-आप अपने विचारो का लंगर उन सब के प्रति सदभावना, शांति और प्रेम का डाल दो ।

-जिस मानसिक रुप से जो देता है, अनिवार्य रुप से उसे भी वापिस वही मिलता है ।

-चेक करो आप की अंदरूनी भाषा विनाशकारी तो नहीं है ।

-अगर लोगों की प्रतिक्रिया नाकारात्मक है और आप को खुशी नहीं रहती है तो समझो आप की अंदरूनी वार्तालाप ठीक नहीं है । तुरंत इसे सुधारों ।

-प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे महत्वपूर्ण समझा जाये, उसे प्रेम किया जाये, उसकी प्रशंसा की जाये ।

-भगवान को सामने देखते हुये, आप अपने संकल्पों में हर उस व्यक्ति को जो आप के सामने आता है या आप के छोटे छोटे खाने पीने आदि का या अन्य काम करते है उन्हे अपने मन में यही अहसास दिलाते रहो, तुम महत्व पूर्ण हो, तुम स्नेही हो और तुम सम्मानित आत्मा हो । ये शब्द सिर्फ बोलने नहीं है ।

- ऐसे ही विश्व की आत्माओ के प्रति कामना करते रहो । तब अथाह खुशी मिलेगी । यह खुशी के विचार आप का अवचेतन मन पकड़ लेगा और मन से हर समय निकलने लगेगें जैसे सांस चलता रहता है । हमें ऐसे लगेगा जैसे स्वर्ग में आ गये है । धीरे धीरे सारी दुनियां जन्नत बन जायेगी और चारो तरफ़ प्रसन्नता ही प्रसन्नता होगी ।

[9:20 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 402

-आज्ञा चक्र -42- अवचेतन मन और भविष्य - जो सोचे सो कैसे पायें -?

-प्रत्येक इंसान में वे सब खूबियां है जो एक सफल इंसान में होनी चाहिये ।

-अधिकतर लोग दूसरो की सफलता के बारे सोचते है अपनी सफलता के बारे नहीं सोचते ।

-जब आप अपनी काबलियत पर ध्यान देंगे तब दूसरो की काबलियत छोटी दिखाई देगी और आप की सफलता की लाइन सब से लम्बी होगी ।

-अधिकतर लोग यह समझते है कि उन के पास वह खूबियां, काबलियत, हुनर नहीं है, जिस की वजह से सफलता प्राप्त की जा सकती है । सफलता पाने की सोचने के बजाय खुद को पहले से ही असफल मान लेते है जिस के परिणाम स्वरूप वह असफल हो जाते है । इस लिये कहा गया है जो जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है ।

-आप वह सब चीजे पा सकते है, उस ऊँचाई तक पहुँच सकते है, उस उपलब्धि को पा सकते है जिसे आप पाना चाहते है । सिर्फ इन्हे पाने लिये अपनी सोच बदलो ।

-पृथ्वी के गर्भ में बहूमूल्य खनिज छिपे हुये है, बाहर से दिखाई नहीं देते फिर भी उन्हे हम ढूंढ निकालते है ।

- मनुष्य का मस्तिष्क भी एक खान है । इस में हर प्रकार के खजाने छिपे हुये है । इन खजानों को प्राप्त करने के लिये सिर्फ अपनी सोच बदलने की जरूरत है ।

-आप की प्रबल इच्छा, आप की कोशिश, आप की महत्व आकांक्षा, आप का जनून आप को इस काबिल बनाता है कि आप मनचाही चीज़ प्राप्त करें ।

-मस्तिष्क एक उपजाऊ जमीन है । सकारात्मक विचार बोने पर सफलता, सुख, खुशी मिलती है । बुरे विचार बोने पर निराशा, असफलता, दुख और परेशानी मिलती है ।

-आप जो कुछ भी कर रहे है और जितनी शक्ति से कर रहे है, उस से करोडो गुणा शक्ति आप के अन्दर छिपी पड़ी है ।

-इस शक्ति को देख नहीं सकते, कल्पना नहीं कर सकते और ना ही तस्वीर खींच सकते है ।

-सोच में कई परमाणु बॉम्ब जैसी ताकत है । वह आप में ऊर्जा भर सकती है । असफलता को ब्लास्ट कर सकती है । दुनियां की हर चीज़ को प्राप्त कर सकते हैं ।

- आप खुद तय करते हैं की आप को शिखर पर जाना है या गर्त में जाना हैं. । सोच ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना देती हैं ।

-मिस्र के पिरामिड, चीन की दीवार, ताजमहल हो या रेडियो, टी वी, मोबाइल, कंप्यूटर वा चाँद पर पहुंचना ये सब मनुष्य की सोच का कमाल हैं ।

- मिलटन और सूरदास अंधे थे,बिथोवन बहरे थे, चर्चिल हकलाते थे,सुकरात की पत्नियों ने उसे आजीवन परेशान रखा, फिर भी उन्होने दुनियां को अलग कर के दिखाया ।

-अपनी डिक्शनरी में 'मुश्किल' शब्द को हटा दो । कभी भी सधारण बातचीत में मुश्किल शब्द प्रयोग नहीं करना । इसके स्थान पर चैलैनज शब्द प्रयोग करो ।

[9:20 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -403

-आज्ञा चक्र -43-अवचेतन मन और भविष्य -2-जो सोचे सो कैसे पायें ?

-जीवन में आने वाली समस्यायें हमारे दिमाग की कसरत के लिये अच्छी होती हैं । जब समस्याओ से सामना पड़ता है तो दिमाग में एक केमिकल उत्पन्न होता है जो दिमाग को ऊर्जावान बनाता है ।

- हमें पता लग जाये कि हमारे घर में सांप घुस आया है तो हम कितने चौकने हो जाते है।

-घोर विकट परिस्थितियो में दिमाग ज्यादा सक्रिय हो जाता है । परेशानी के वक्त दिमाग अन्य समान्य समय की तुलना में अधिक साकारात्मक ढंग से सोचता है । यह स्थिति बहुत ही शक्तिशाली होती है जो कि विपरीत परिस्थितियो से लड़ने में मदद करती है । मनुष्य अधिक सोचने लगता है ।

-जिस गली में कुत्ते काट खाते है वहां से गुजरते समय हम कितने अलर्ट रहते है ।

-वही लोग जीवन की दौड़ में आगे रहते है, जिन्हे समाजिक, शारीरिक और आर्थिक अड़चनों का सामना करना पड़ता है ।

-वास्तव में जब हम भगवान की आज्ञा अनुसार मेहनत नहीं करते है, तब वह हमारे सामने चुनौती देता है, जिसे हम पार करते करते महान बन जाते है ।

-आप वफादारी से चल रहे है, आप में सारे गुण हैं, फिर भी लोग उचित महत्व नहीं देते हैं तो इस का अर्थ होता है, भगवान आपको उनसे महान बनाना चाहता है । ये दिमाग में रख कर तुरंत बुक्स पढ़ने या अच्छे काम में अपने को बिज़ी कर दो । उनके प्रति कल्याण भाव रखो ।आप का भविष्य उजवल होगा ।

-अधिकतर लोग अपने आस पास रहने वाले लोगों को असफल देख कर अपने आप को असफल घोषित कर देते है । मन की हार जीवन की हार होती है । मन में जीत का जज्बा पैदा करो । मै इसे हासिल कर के रहूंगा जैसी बातें अपने मन में भर लो ।

-कल्पना में हर समय अच्छी चीजे याद रखा करो । कल्पना शक्ति का केन्द्र हमारे दिमाग के उस भाग में है जहां मन की 80% शक्ति है और बिना उपयोग किये ही यह शक्ति पड़ी रहती है । जब

कल्पना करते है तो हम डाइरेक्ट अवचेतन मन से कार्य करने लगते है । इस तरह योग से प्राप्त शक्ति बच जायेगी और आप बहुत जल्दी सम्पूर्ण बन जायेंगे ।

- भगवान को याद करते हुये कल्पना शक्ति का प्रयोग किया करो इस से आप की लौकिक सफलता की गति डबल हो जायेगी ।

-कोई भी परिस्थिति आने पर सोचा करो, इस समय मेरे वश में क्या है ?

-इस पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ आपकी सोच ही आप के वश में है । इसके इलावा और कुछ नहीं है । इसलिये तुरंत अपनी सोच बदलो ।

-जो विचार हम 15 दिन दिमाग में रखते है वह हमारी आदत बन जाते है, फिर हम आदत अनुसार कार्य करने लगते है ।

-मन में कल्याण और विजय के विचार आप को विजयी बना देंगे । भविष्य में आप वही होगे जो इस समय आप अपनी कल्पना में सोच रहे है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 404

-आज्ञा चक्र -44-अवचेतन मन और भविष्य -4-जो सोचे सो कैसे पायें ?

-हमारा मस्तिष्क विचारो का ब्रॉडकासटिंग और रिसीविंग स्टेशन है । इसकी फ्रीक्वेंसी इतनी ही होती है कि उसे हम ही सुन सकते है । दूसरा कोई नहीं सुन सकता ।

-जो बात हम ब्रॉडकास्ट करते है वही बातें हम रिसीव करके सुनते है । हम जो रिसीव करते है उसका ही असर हमारी भावनाओ व स्वभाव पर पड़ता है । यह बात बड़ी अजीब ज़रूर लगती है लेकिन यह बिलकुल सच है ।

-जब आप ब्रॉडकास्ट करते है मै बुरा हू, मै यह कर नहीं सकता तो आप यही सुन रहे है और आप नाकारात्मक हो जायेंगे । यही करने लगेगें ।

-मस्तिष्क केवल उन्ही बातो को ग्रहण कर के और प्रसारित करता है है जो आप खुद प्रसारित करना चाहते है । जब तक आप अपने बारे में बुरा, नाकारात्मक सोचते रहेंगे, वह आप को बुरा नाकारात्मक कहता रहेगा ।

- ब्रॉडकासटिंग आप के कंट्रोल में होती है । अच्छी प्रसारण करते है या बुरी । आप अपने बारे में अच्छी बाते ब्रॉडकास्ट करेगें तो आप को अच्छा लाभ मिलेगा । बुरी ब्रॉडकास्ट करेगें तो परेशानी, समस्या, निराशा मिलेगी ।

-इसमे आप को एक प्रकार की पावर मिलेगी । इसे वैल पावर कहेंगे विल पावर नहीं कहेंगे विल पावर और वैल पवर में फर्क होता है ।

-विल पवर पूरी बाडी में उत्पन्न होती है । जिसे आत्म शक्ति के रुप में पहचाना जाता है । विल पवर से हम अपने मन के भय को दूर करते है । अपने अन्दर एक शक्ति महसूस करते है । इस से जीने की इच्छा,पाने की चाहत, भय से मुक्ति मिलती है ।

-वैल पॉवर सिर्फ मस्तिष्क में उत्पन्न होती है । जो किसी चीज़ को पाने, उसे हासिल करने, उसे ऊंचाई तक पहुंचाने के लिये एक जोश, एक जज्बा, एक लगन पैदा करती है । आप के पास जितना वैल पावर होगा आप उतनी तेज गति से सफलता की ओर बढेगे । फिर भी इस विषय पर विज्ञानिक शोध की आवश्यकता है ।

-सदा मन में सोचते रहो मै देवता हू, मै दूसरो के लिये आदर्श हू, मै खुशहाल हू, मै धनवान हू, मै विश्व महाराजा हू, मै दयावान हू, मै प्रसन्नचित हू, मै अकेला नहीं, अकेलापन भगवान ने मुझे इसलिये दिया है ताकि यह समय मै भगवान को दूं, इस समय मुझे भगवान से बातें करनी है । ऐसा सोचने से आप में वैल पावर बढेगी ।

-वैसे हमारे दिमाग में सहस्त्रार चक्र में 1000 अन्टिना लगे हुये है । यह अन्टिने विश्व में या परमात्मा के घर में, कहीं भी कुछ भी हमारे बारे कोई सोचता है या कोई घटना घटती है, वह सब भी हम प्राप्त कर लेते है और ये तरंगे इतनी सूक्ष्म होती है कि उन्हे सुन नहीं सकते परंतु गहरे तल पर रेकोर्ड हो जाती है । बस हम अनजानी खुशी, भय या सुख दुख क भाव महसूस करते है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 405

-आज्ञा चक्र -45- अवचेतन मन और भविष्य - संचार व्यवस्था कैसी होगी ।

-अभी हमारा मन अपने दोस्तो और विरोधियों के पास चला जाता है उन्हे हम मन की आंखो से देखते रहते है और उनसे मन ही मन अच्छी बुरी बातें करते रहते है ।

-ये जो मन में एक दूसरे से वार्तालाप करते है, यह सच है । हमारे विचार एक दूसरे को प्राप्त होते रहते है । हमारी बुधि इन विचारो को सुन नहीं सकती क्योंकि ये विचार बहुत सूक्ष्म होते है और बुधि स्थूल बोल के संकल्पों को समझती है । भविष्य में योग से हम बुधि को जीत लेगें । बुधि काम करना बंद कर देगी और हम अवचेतन मन से एक दूसरे से बात कर सकेंगे जैसे आज हम मोबाइल से करते है ।

-ऐसे उतम क्वालिटी के यंत्र निकलेगे जो अवचेतन मन से चलेंगे और दूसरे व्यक्ति से सम्पर्क कर सकेंगे । उनके मन की आवाज़ सुन सकेंगे और वह हमारे मन की बात सुन सकेंगे । ऐसे लगेगा जैसे हम आमने सामने बैठे हो ।

-ऐसे टेलीविज़न निकालेगे जो अवचेतन मन से चलेंगे और हम जहां का सोचेगे वहां की तस्वीर भी हमें दिखाई देगी ।

-हमारे पास सूपर कंप्यूटर होगे जो अवचेतन मन से चलेंगे और उस में हम भगवान को अपने सामने देख सकेंगे और उनसे बातचीत कर सकेंगे । आज हम वीडियो कान्फरेन्स के द्वारा जैसे दूसरी जगह के व्यक्तियों से सवाल जवाब करते है । ऐसे ही भगवान से सवाल जवाब कर सकेंगे ।

-हम अपने इष्ट से बात कर सकेंगे ।

-ऐसे अति संवेदनशील कंप्यूटर होगे जो अवचेतन मन से चलेंगे और उन के द्वारा हम मृत व्यक्तियों से बात कर सकेंगे । वह कहां है, क्या कर रहे है, यह सब हमें दिखाई देगा ।

- ऐसे अदृश्य लेज़र कंप्यूटर होगे जिनके द्वारा हम भविष्य घटनाये जान सकेंगे । पूरे 5000 साल का जो ड्रामा है उसकी पूरी स्टोरी देख सकेंगे ।

-ऐसे टेलीविज़न होगे जो अवचेतन मन से संचालित होगे और हम अपने किसी भी पिछले जन्म की पूरी रील देख सकेंगे ।

-इस जन्म में अमुक दिन अमुक वर्ष में क्या क्या किया उसे देख सकेंगे ।

-ऐसे कंप्यूटर होगे जो अवचेतन मन से चलेंगे और दूसरे किसी भी व्यक्ति के वर्तमान, भविष्य और भूतकाल को देख सकेंगे ।

-हम किसी भी ग्रह, तारामंडल की सूक्ष्म गतिविधियों को देख सकेंगे ।

-ब्रह्मा पूरी, विष्णुपूरी, शंकरपूरी और परमधाम में कब क्या हो रहा है, कैसे मनुष्यों के कर्मों का हिसाब होता है, कैसे मृत्यु की कार्यप्रणाली चलती है । इन सब गतिविधियों को देख सकेंगे, सुन सकेंगे और वहां के देवताओं से बातचीत कर सकेंगे ।

-भगवान कैसे कार्य करते है वह सब हमें दिखाई देगा ।

-अभी जो आप किसी के बारे सोच रहे है, वह व्यक्ति आप को सुन रहा है । परंतु यह सूक्ष्म है और सच है । यह ईथर के माध्यम से हो रहा है । आप सिर्फ अपनी इस सोच पर ध्यान रखो नहीं तो आप की शक्ति एक दो से टकरा कर नष्ट होती रहेगी और आप उपर कही गई खोजे नहीं कर पायेंगे ।

-मैनेजमेंट करने वाली श्रेष्ट बहिनों और भाईयो की एनेर्जी बहुत नष्ट हो रही है । इसे अच्छे काम में लगाना चाहिये, टकराव से बचेंगे, तभी बाबा की इच्छा पूर्ण कर सकेंगे ।

-अवचेतन मन एक महान शक्ति है इसे विकसित कर के जो चाहे प्राप्त कर सकते है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 406

-आज्ञा चक्र -46- अवचेतन मन और भविष्य - रोगों का इलाज.

-अवचेतन मन के द्वारा हम किसी भी रोग का इलाज कर सकेंगे ।

-अवचेतन मन के द्वारा हम बिना किसी यंत्र के देख सकेंगे कि शरीर के किस भाग में रोग है और उसका कारण क्या है । जैसे कि पुराने ऋषि मुनि देख लिया करते थे ।

-रोग के उपचार के लिये किस जड़ी बूटी की जरूरत है हमारा अवचेतन मन उस जड़ी बूटी से औषधीय अंश खींच लेगा, वह जड़ी बूटी चाहे विश्व के किसी भी कोने में हो । जैसे हनुमान लक्ष्मण को जीवित करने के लिये संजीवनी बूटी ले कर आया था ।

-दूर दराज़ रहने वाले व्यक्तियों का इलाज डॉक्टर लोग घर बैठे हुये अवचेतन मन से कर सकेंगे ।

-अवचेतन मन के द्वारा ऐसी लबोट्री बनाई जायेगी जिस में व्यक्ति के किसी भी अंग का पुनर्निर्माण कर सकेंगे । ये लबोट्री मां के पेट के समान होगी ।

- कोई व्यक्ति किसी बीमारी के कारण सूख गया है तो उसे अवचेतन मन के द्वारा थोड़ी ही देर में हृष्ट पुष्ट बना देगे । लाहिड़ी बाबा भी ऐसे चमत्कार किया करते थे ।

-किसी व्यक्ति का किसी आक्सीडेंट आदि की वजह से अगर शरीर टूट फूट गया है तो अवचेतन मन की सहायता से उस के शरीर का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा ।

-मानसिक रोगों का इलाज भी अवचेतन मन से किया जा सकेगा ।

-अवचेतन मन के द्वारा किसी भी मानसिक रोगी को भगवान से कनेक्ट कर देंगे और भगवान की शक्ति से उनके दिमाग की रीप्रोगरामिंग हो जायेगी जैसे आज हम कंप्यूटर की करते है । इस तरह मानसिक रोग कुछ ही मिनट में ठीक हो जायेगा ।

- ऐसे लेज़र यंत्र बनायेंगे जो अवचेतन मन से ओपरेट होगे जिस से आँखो का कोई भी रोग ठीक किया जा सकेगा । कोई चीर फाड़ नहीं करनी पड़ेगी और कुछ ही मिनटों में ठीक कर देंगे ।

-सूक्ष्म विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह वा ईर्ष्या, द्वेष आदि मानसिक रोग है । इन्हे भी अवचेतन मन के द्वारा ठीक किया जा सकेगा । जो विकार 50 साल में ठीक नहीं होते उन्हे कुछ मिनटों में ठीक कर सकेंगे ।

-किसी व्यक्ति ने कहां जन्म लिया है ये भी अवचेतन मन के द्वारा जान सकेंगे ।

- भगवान को याद करने से दिमाग के सूक्ष्म तंतुओ का अपरेशन हो जाता है, दिमाग बदल जाता है ,सोच बदल जाती है, ये क्यों होता है किसी को पता नहीं परंतु होता है । अवचेतन मन की शक्ति से इस परिवर्तन का हम अधिक लाभ उठा सकेंगे ।

-मेरा अनुरोध है कि हरेक राज्य में एक ऐसी लैब बनायी जाये उस में ऐसे भाई बहिन रखे जाये जिनको रोज़ी रोटी की चिंता ना हो वह अवचेतन मन के उपर शोध करें, उन्हे हर प्रकार की सुविधा हो, उन्हे भाषणों से बचा कर रखे, उनका ध्यान सिर्फ खोज पर हो । वह ऐसे यंत्रों की खोज करें जो मन से कार्य करें । उन्हे हर प्रकार की सुविधा दी जाये ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 407

-मनोबल द्वारा अमीर बने -1

-अमीरी एक चक्र है

-अपने दिल में हमेशा याद रखो कि इंसानों की परिस्थितियाँ एक चक्र पर घूमती रहती है और इस चक्र को इस तरह से बनाया गया है कि यह किसी भी व्यक्ति को हमेशा सौभाग्यशाली बनाने से रोकता है ।

-इस का अर्थ यह है कि जब आप आगे बढ़ना चाहेंगे तो लोग कोई प्रत्यक्ष कोई अप्रत्यक्ष रुप से तुम्हारे आगे रूकावटे पैदा करेगें । उनकी ज़बान बड़ी मीठी होगी । ये चीजे तुम्हे अनुभव से आयेगी । तुम्हे कोई समझाना भी चाहेगा तो समझ नहीं आयेगा और हमें लगेगा कि यह हमारा शुभ चिंतक हमें भड़का रहा है । समय बीतने के बाद समझ आता है तब आप कुछ कर नहीं सकते ।

-जीवन का चक्र हम सब के भाग्य को नियंत्रित करता है । यह चक्र विचार की शक्ति के माध्यम से काम करता है ।

-अमीरी की चाबी इस लिये बनाई गई है, ताकि आप इस महान चक्र पर नियंत्रण और विजय पा सके, ताकि आप अपनी मनचाही चीजे प्रचुरता में पा सके ।

-याद रखो जो चक्र किसी भी व्यक्ति को हमेशा सौभाग्यशाली बनने से रोकता है, उसे इस तरह भी बनाया जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति हमेशा दुर्भाग्यशाली ना रहे, बशर्ते वह अपने मस्तिष्क को पूरी तरह नियंत्रित कर लें और जिंदगी में किसी निच्छित प्रमुख लक्ष्य को पाने के लिये उसका प्रयोग करें ।

-इंसान की कमजोरी यह है कि वह बगैर कुछ किये बहुत कुछ पाना चाहता है ।

-जिंदगी के हर क्षेत्र में लोग सदियों से दूध और शहद की नदियों की तलाश कर रहे है या बाबा टल पकी पकाई घल जैसे चमत्कार की आशा करते रहते है।

-याद रखो लाभदायक फलों वाले पेड़ और फसलें उगानी पड़ती है अपने आप नहीं उगती ।

-बहिनों को रोटी वा अन्य चीजे रसोई में बनानी पड़ती है अपने आप नहीं बनती ।

-हमें रोटी खानी पड़ती है, मुंह हिलाना पड़ता है, भोजन चबाना पड़ता है, अपने आप भोजन पेट में नहीं जाता ।

-आज पैसा कमाने की बड़ी होड़ लगी हुई है । हरेक व्यक्ति के मन में एक ही सवाल रहता है नौकरी कैसे मिले,बेरोज़गारी का हल क्या है । बहिनों का एक ही प्रश्न रहता है हम तो काम धंधा नहीं करती, आय कैसे बढे । बच्चो को नौकरी कैसे मिले ।

-धन कमाने का सब से आसान फ़ार्मूला है आप इस समय जहां है वहीँ से शुरू कर दो अर्थात आप जो भी कार्य कर रहे है , वह काम ज्यादा करो और अच्छे ढंग से करो ।

-आप से पेंसिल मांगी जाये तो उसे आगे बढ़ कर पेंसिल शील कर दो ।

-आप से चाय मांगी जाये तो आप चाय के साथ कुछ खाने को भी दे दो ।

-आप विद्यार्थी है तो जो तुम्हे पढाया जाता है उस से आगे का एक चेप्टर पढ़ कर जाओ ।

-आप व्यापरी है तो जो सेवा आप देते है उन्हे उनके घर तक पहुँचाने में मदद करो ।

-तुम्हारे को कपड़े धोने को कहा जाता है तो आप उसे परैस कर के दो ।

- आप योगी है तो आप उन्हे सिर्फ उपदेश नहीं दो उन्हे मानसिक तरंगे दो, अपना पन दो, उनके सुख दुख का ध्यान रखो । उन्हे आगे बढ़ने में मदद करो । उनका मन से सम्मान करो सिर्फ दिखावा नहीं करो ।

-आप नौकरी करते है तो काम पर आधा घंटा पहले पहुंचो और एक घंटा देर तक काम करो ।

-आप के पास जो भी लोग है, उनकी गलती पर डाँट नहीं मारो, उन्हे प्यार से समझा दो, वह अगली बार सही करेगें या वह काम उन्हे कर के दिखा दो ।

-आप मजदूर है तो काम पर थोड़ा ज्यादा समय लगाओ, कामचोरी नहीं करो ।

-हर काम को अपना काम समझ कर करो ।

-जो भी काम करते हो सोचते रहा करो, उस से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ते रहा करो कि इसे और कैसे बढिया ढंग से और जल्दी कर सकता हू ।

-तुम जो भी काम कर रहे हो उसे छोडो मत । उसे तब छोडो जब उसे कोई बढिया काम मिल जाये ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -408

- मनोबल द्वारा अमीर बने -3

-शिक्षा

-अगर आप अमीर बनना चाहते हैं तो अपने आप को हर समय शिक्षित करते रहो ।

जितना अधिक आप के पास ज्ञान होगा, उतना ही ज्यादा अमीर बन सकेंगे ।

-पुस्तकालय ज्ञान का भंडार हैं । वहां पर हर विषय में बहुत सा ज्ञान मुफ्त में मिलता हैं ।ज्ञान मस्तिष्क का भोजन हैं ।

- जीवित रहने के लिये हरेक व्यक्ति 5-7 रोटीया हर रोज़ खाता है । ऐसे ही दिमाग की एक दिन की खुराक 10 हजार शुध्द शब्द है । यह शब्द हमे पढ़ने से ही मिलते है ।

- लौकिक पढाई के बाद लोग पुस्तकें पढ़ना छोड़ देते है । जब लोग अपने दिमाग को हर रोज़ नये विचार नहीं देते तो उनका और उन से सम्बन्धित लोगो का विकास भी रुक जाता है ।

- आप जिस दिन नया नहीं पढ़ते है तो उस दिन आप का थोड़ा सा पतन हो जाता है ।धीरे धीरे परिवार, समाज और देश का पतन हो जाता है ।

-प्रत्येक व्यक्ति को हर रोज़ नया पढ़ना चाहिये चाहे कितने भी व्यस्त हो । क्योंकि व्यक्ति इकाई है । अगर इकाई का विकास रुक गया तो सारा संसार दुखी हो जायेगा । इकाई सुखी तो सारा संसार सुखी ।

-जो व्यक्ति फालतू के अखबार या पत्रिकायें पढ़ने में अपना सारा खाली समय बर्बाद करता है, वह कभी अमीर नहीं बन सकता ।

-धन प्राप्ति का एक ही साधन है ज्ञान । इसलिये अपने को ज्ञान से भरपूर करो । वह ज्ञान चाहे लौकिक हो चाहे शारीरिक हो, चाहे आध्यात्मिक हो , चाहे कोई और कला हो ।

-लौकिक पढाई की सबसे उंची डिग्री प्राप्त करो । जितनी उंची डिग्री होगी उतना ही धन कमाने के लायक होगे ।

-जितना अधिक आध्यात्मिक ज्ञान होगा उतना ही अधिक सम्मान और धन लोग आप पर न्योछावर करेगें ।

-जितना अधिक शारीरिक ज्ञान होगा उतना ही आप स्वयं स्वस्थ रहेंगे और दूसरो के रोग ठीक कर सकेंगे तथा अपनी आजीविका के लिये धन कमा सकेंगे ।

- बुक्स पढ़ते पढ़ते डॉक्टर,.इंजिनियर,वकील वा वैज्ञानिक बन जाते है ।

-ऐसे ही हम अमीरी पर बुक्स पढ कर धनवान बन सकते है । गरीबी का मुख्य कारण यह है की अमीरी पर लोग बुक्स नहीं पढ़ते । सबसे बड़ी बात यह है कि आम लोगों को तो पता ही नहीं कि अमीरी पर कौन सी बुक्स है । कुछ बुक्स नीचे सुझाव के रुप में दे रहा है । इन्हे पढ़ कर आप धनवान बनने की युक्तियां प्राप्त कर सकते है ।

करोड़पति कैसे बने -डा आर एस अग्रवाल ।

अमीर बनने के रहस्य -उदय प्रसाद गुप्ता

अमीरी की चाबी आप के हाथ मे -नेपोलियन हिल

अमीर बनने के रहस्य -उदय प्रसाद गुप्ता

अमीरी का रहस्य -वैलेस डेलोएस वेटट्ल्स्य.

अमीर कैसे बने -पैट्रिशिया जी होरन

अमीरी का रहस्य -वैलेस डेलोएस वेटट्ल्स्य

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 409

-मनोबल द्वारा अमीर बने -4

-घर सम्भालने वाली बहिनें भी मनोबल द्वारा अमीर बन सकती है ।

-कोई व्यक्ति महान तब बन सकता है जब कोई एक महिला उसको दिल से सहयोग देती है । ऐसे ही एक महिला तब महान बनती है जब कोई एक पुरुष उसको अपना पूर्ण समर्थन देता है ।

-आज मंहगाई के युग में जिन घरो में बहिनें घर सम्भालती है, प्रायः पूछती है की धन की कमी रहती है । क्या करें ?

-वह ज्यादा पढी लिखी नहीं है और ना ही कोई हुनर है जिस से धन कमा सके ।

-घर सम्भालने वाली बहिनें ज्ञान और योग से अमीर बन सकती है ।

-घर सम्भालने वाली बहिनें धन के लिये अक्सर अपने पति पर या पापा पर, या भैया पर या बेटे पर निर्भर होती है ।

-सभी बहिनें अपना सोर्स ऑफ इनकम देखे । जिस व्यक्ति पर आप धन के लिये निर्भर है उसे आप को मदद करनी है । स्थूल रुप में तो आप उनकी मदद कर रहे है, परंतु उनकी सूक्ष्म रुप अर्थात मन से भी मदद करनी है ।

-मान लेते है आप का सोर्स ऑफ इनकम आप का पतिदेव है ।

-अपने पति को आप को हर समय तरंगे देनी है । जब वह आप के आस पास घर में होता है, उसको मन ही मन कहते रहो आप शांत हो शांत हो या स्नेही हो स्नेही हो या आप बहुत मधुर हो मधुर हो या आप बहुत चुस्त हो चुस्त हो या आई लाइक यू लव यू एंड रेस्पेक्ट यू । आप बहुत बुधीमान हो ।

-आप के ऐसा सोचने से आप के मन में साकारात्मक बल बनता है जो आप के पतिदेव को शक्तिशाली बनाता है । उसे बदल देता है और वह उत्साहित होता है । आप के लिये वह कुछ भी करने को तैयार रहेगा ।

-याद रखो हमारे घर शांति की फेक्टरियां है । हम दिन भर काम करके थक जाते है संघर्षों में टूट जाते है और घर इसलिये आते है क्योंकि हमें अपनो से प्यार मिलता है, शांति मिलती है, अपनापन मिलता है, सम्मान मिलता है, जिस से हम तरोताजा हो जाते है और अगले दिन और उत्साह से हम कार्य में जुट जाते है ।

-जिन घरों में लोग लड़ते रहते है,टकराते रहते, एक दूसरे से कड़वा बोलते है, उन घरो में रहने वाले व्यक्तियों की एनेर्जी शून्य हो जाती है, वह काम धंधे में असफल हो जाते है । आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है ।

-जिन घरो में धन की कड़की है उसका मूल कारण उस घर में स्नेह की कमी है ।

-इसलिये हमेशा अपने पति के प्रति अच्छा ही सोचते रहना है । उसमें चाहे कितनी बड़ी कमजोरी हो उस पर ध्यान नहीं देना ।

-अगर उसमे गुस्सा है, कोई और ऐब है, नशा आदि करता है, या आलस्य है या कम बुधिवान है या कामचोर है तब भी आप को उसके इन अवगुनो पर ध्यान नहीं देना है ।

-उस में यह सब अवगुण और कुछ नहीं केवल सम्मान और स्नेह की कमी को दर्शाते है, उन्हे अपने लोगों से प्यार नहीं मिला है ।

-वह जब सोया हुआ होता है, उस समय उसके प्रति स्नेह की तरंगे या सकारात्मक शव्दो की तरंगे दिया करो इस से वह बहुत जल्दी शक्तिशाली और उत्साही बनेगा ।

-ऐसा करने से उसकी बुरी आदतें ख़त्म होगी और अपने काम धंधे पर पूरे ध्यान से काम.करेगा और आप के घर की आर्थिक दशा सुधरने लगेगी ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -410

-मनोबल द्वारा अमीर बने -5

-घरेलू बहिनें मन द्वारा धनवान कैसे बने ।

-शांति स्थापित करने के लिये दो देशों के बीच में नियंत्रण रेखा अर्थात एल ओ सी बनाई जाती है ।इसे पार करने से आर्थिक हानि होती है ।

-दो व्यक्तियों के बीच एल ओ सी अर्थात सम्मान की रेखा बनाई जाती है । अगर पति पत्नी आपस में सम्मान की रेखा पार करते है तो मन मुताबिक काम नहीं होते, संघर्ष होने लगता है, जिस से आर्थिक दशा छिन भिन हो जाती है ।

-अगर घरेलू बहिनें धनवान बनना चाहती है तो सम्मान को बरकरार रखे ।

- जब पति घर से बाहर कार्य स्थल पर जाता है तो उसे शुध्द संकल्प देते रहो, उसे अपनी छत्रछाया में रखो । उसे भगवान की याद से तरंगे देते रहो । अगर आप किसी संस्था से नहीं जुड़े हुई है तो अपने पतिदेव के लिये हर समय प्रार्थना करते रहो । यह उसका सम्मान है ।

-उसे अपने सामने देखते रहो । उसके और आप के बीच में भगवान को हाज़िर नाजिर देखो और मन ही मन कहते रहो आप शांत हो, स्नेही हो ।

-आप ग्राहकों से बहुत मिठास से बोलते है । किसी पर गुस्सा नहीं करते है ।

-आप बहुत एकाग्रचित्त रहते हो । आप की बुधि कहीं विचलित नहीं होती ।

--आप से समान खरीदने वाले ग्राहकों की लम्बी लाइन लगी रहती है ।

-आप का माल बहुत उंच है, इस से ग्राहकों को बहुत लाभ होता है । आप से समान खरीदने वाले लोगों में होड़ लगी रहती है ।

-आप बहुत ईमानदारी से काम करते है ।

-आप चरित्रवान हो । आप आदर्श हो । हमें आप पर गर्व है ।

-आप अपना काम उत्साह से करते हो ।

- आप अपना काम कल पर नहीं टालते हो ।

-आप अपने समान की क्वालिटी सुधारते रहते है ।

-आप खुश रहते हो । आप सभी का सम्मान करते है ।

-उस में अवगुण होगे, खामीया होंगी, परंतु आप के शुध्द विचार उसको बदल देंगे और काम धंधा बहुत अच्छा चलेगा जिस से अथाह पैसा आयेगा और आप को कंजूसी से नहीं चलना पड़ेगा ।

-ऐसे ही आप अपने पापा के लिये या भाई के लिये हर समय शुध्द संकल्प करते रहे अगर आप उन पर निर्भर है ।

-आप के ऐसा सोचने से आप बहुत हल्के रहेगी । आप का योग अपने आप लगा रहेगा । आप जहां कहीं जायेंगी, उन सब को आप का आना बहुत अच्छा लगेगा । जिस से आप का मनोबल बढेगा ।

-आप के ऐसा सोचने से बीमरियां नहीं होगी, आप फिजूल खर्च नहीं करेगी, आप का समय और धन निर्माण कार्यों में लगेगा जिस से आप का धन बढ़ने लगेगा ।

-आप के पतिदेव के काम में बरकत पड़ने लगेगी और उसके परिणाम स्वरूप आप धनवान बन जायेंगी ।

-यही नियम विश्व के दूसरे व्यक्तियों के लिये लागू होता है, जिस से आप को धन मिलता है, अर्थात जहां आप नौकरी या दूसरे काम करते है या सेवा के कार्य करते है और जिस से आप की रोज़ी रोटी चलती है ।

-अपनी संतान के लिये कुछ अलग विधि अपनानी पड़ती है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल- 411

-मनोबल द्वारा अमीर बने -6

- बच्चो के द्वारा घरेलू बहिनों को धन की प्राप्ति ।

-सभी बहिनों ने कोई ना कोई सपना संजोया था या कोई लक्ष्य रखा था कि हम डॉक्टर बनेगी, वकील बनेगी, टीचर बनेगी या ऑफीसर बनेगी । परंतु किन्हीं कारणों से आप अपना लक्ष्य पूरा नहीं कर सकी और आप के अन्दर एक कसक उठती है कि काश मैं यह कर सकती ।

-आप अपनी उस इच्छा को, लक्ष्य को अपने बच्चो से पूरा करो । बच्चे आप का भविष्य है । आप को जो दिक्कते आई थी वह बच्चो को मत आने देना । उनको सही गाइड करो ।

- दुनिया मे जन्म लेने वाला हर एक बच्चा, भगवान की नई सोच, नई प्लानिंग है । इसके लिये भगवान ने आप को उनकी देखभाल के लिये नियुक्त किया । किसी भी एक बच्चे से निकला हुआ एक विचार पूरे विश्व को बदल सकता है।

-परिवार बच्चे का आधार स्तम्भ है । लाचिग पैड है ।

-जैसे किसी राकेट के लिए लाचिग पैड होता है। यदि वह दुरूस्त है तो राकेट ऊच्चाइयों को छू लेता है ।

-सबसे ज्यादा एनर्जी राकेट के छोड़ने समय खर्च होती है।

-परिवार दुरूस्त है तो बच्चा इतना महान बनता है कि जिस की कल्पना नही कर सकते ।

- इसके लिये आप को बच्चे को झिड़कना नही, मनोबल नही तोड़ना चाहे वह कितना भी शरारती हो ।

-उन्हे महान विचारक बनाओ । बच्चे जिन प्रश्ननो के हल ढूंढते है, वह सब पुस्तको मे पहले से है । घर मे श्रेट पुस्तको को रखना प्रारम्भ करें ।

-श्रेट पुस्तको से घर भर दो, चाहे आप पढ़ नही सकते । आप के बच्चो की जिन्दगी मे जब दिक्कते आएंगी तो उनका हल पुस्तको मे उपलब्ध होगा ।

-प्रत्येक रात्रि अपने बच्चो के साथ आधा घंटा पुस्तके पढने मे बिताओ ।

-हर हाल में अगर 15 मिनट पुस्तके पढते है और योग मे बैठते है तो बच्चो को सन्देश जाता है कि पुस्तके पढना तथा योग लगाना कितना जरूरी है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल-412

-मनोबल द्वारा अमीर बने -7

-बच्चो द्वारा घरेलू बहिनों को धन की प्राप्ति ।

-बहने, आमतौर पर बच्चो के बारे बहुत चिंतित रहती है। पूछती है , वह पढ़ते नहीं, उन की बुरी आदते केसे छूटे, उन्हे श्रेष्ठ केसे बनाए ।

-स्थूल पालना वा स्थूल साधन तो बच्चो को देते है, उनका महत्व तो सब को पता है । परंतु बच्चो के जीवन के निर्माण में संकल्पों का सब से अधिक महत्व है । बहिनें अपने संकल्पों द्वारा बच्चो को जैसा चाहे वैसा बना सकती है ।

-बच्चो को कल्पना मे देखो । जब आप उन्हे कल्पना में देखते है तो आप का उनके मन से सम्पर्क हो जाता है । कल्पना में जो उनके बारे सोचेगी वह वही करने लगेगें ।

-माता के संकल्प बच्चे को प्रेरित करते है ।

-बच्चे और आप के बीच बाबा/भगवान / ईष्ट को देखो ।

-बाबा को याद करो । आप के विचार बच्चा सुन रहा है । वह बदलेगा ।

-वह आलसी है, परन्तु आप ने मन मे सोचना है, यह बहुत चुस्त है ।

-बच्चा जिद्दी है, भाव रखो, आज्ञाकारी है ।

-वह क्रोधी है , तो भाव रखो, स्नेही है ।

- वह शरारती है तो भाव रखो बहुत भला है ।

-बच्चा पढता नही है, उसे यही बार बार कहते रहते है । इसके बजाय मन मे कहो पढता है पढता है । धीरे-धीरे पढने लगेगा । निराश नही होना।

-लोग कहेगे और दिखेगा भी कि वह एवरेज है, आप स्मृति मे रखे वह बहुत होशियार है। किसी की बात न सुने ।

-पता नही कही बच्चा बिगड न जाये । समय ऐसा है । सदा भाव रखो आप आदर्श हो , चरित्रवान हो। आप गल्ती नही कर सकते । सीधे आते सीधे जाते हो ।

-पता नही नौकरी मिलेगी कि नही । सदा भाव रखो कि फलानी फलानी संस्था मे प्रोफेसर, इंजीनियर या आफिसर बनेगा ।

-बच्चा जो है वह न सोच कर, जो आप चाहते है कि वह बने, वह सोचो ।

- जैसे हमें सिखाया जाता है सांसो सांस भगवान का सिमरन करो ऐसे ही हर पल हर समय बच्चे के लिए अच्छे भाव रखे उनके बारे अच्छा सोचते रहो ।

-पेट में बच्चे के प्रत्येक अंग प्रत्यंग का निर्माण होता है । जन्म के बाद वही काम माता के संकल्प बच्चो के चरित निर्माण का कार्य करते है, व्यक्तित्व का निर्माण करते है, उसे गरीब या अमीर बनने के लिये प्रेरित करते है । इसलिये माताओं को अपने संकल्पों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिये । जितना आप के संकल्प श्रेष्ट होगे उतना ही बच्चा महान बनेगा ।

-बच्चा माता के विचारो का अम्प्लीफायर है । मातायें बच्चो के प्रति जो सोचती है, बच्चे उसे पकड़ लेते है और वही बढा चढ़ा कर करने लगते है ।

-अगर मातायें बच्चो को मन से लायक बना देती है तो वह इतना धन लायेंगे कि माताओं को कमी नहीं रहेगी ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -413

-मनोबल द्वारा अमीर बने -8

-बच्चो द्वारा घरेलु बहिनों द्वारा धन की प्राप्ति ।

- विश्व का प्रत्येक बच्चा एक पेड़ के समान है । पेड़ की जितनी ज्यादा देखभाल की जाती है । खाद पानी का ध्यान रखा जाता है उतना ही ज्यादा फल हम पौधे से प्राप्त कर सकते है ।

ऐसे ही प्रत्येक बच्चा अनंत शक्तियों का भंडार है । अगर बच्चो का ठीक ढंग से मानसिक पालना पोषण किया जाये तो परिवार के लिये धन की बरसात कर देगा ।

-अभिभावक चाहते हैं जैसे वह कहते हैं, बच्चे वैसा ही करें परंतु बच्चे दुर्भाग्यवश अपने माता पिता की इच्छाअनुसार नहीं बनते । yऐसा इसलिये नहीं कि बच्चे नालायक होते हैं, परंतु इस का कारण मां बाप की बच्चो के प्रति मानसिक सोच हैं

- बच्चे आलसी, क्रोधी, मंद बुदधि एव अहंकारी क्यो है ।

-.बच्चे वही बोलते हैं जो परिवार के बड़े बोलते हैं ।

- मां बाप या दादा दादी जो बच्चो के बारे मन मे सोचते है, भाव रखते हैं, बच्चे वही करते हैं, वही बनते हैं ।

-अगर एक बच्चे को कम नम्बर आते है तो मां बाप उसे उत्साहित करते है, ट्यूशन देते है । अगर वह 2-3 बार नम्बर कम पाता है तो मां या बाप उसके प्रति भाव रखने लग जाते है कि यह मन्द बुधि है, कितनी भी कोशिश करो, अचछे नम्बर नही ले पाएगा ।

-धीरे-धीरे परिवार के दूसरे सदस्य भी उस के प्रति यह सोचने लग जाते है कि यह मन्द बुधि है ।

-बच्चा मन्द बुधि ही बनेगा । बच्चे को ऐसा, उस के प्रति आपकी जो सोच है उसने बनाया है ।

-धीरे धीरे बाहर के लोग उस के प्रति मंद बुधि का भाव रखने लगेगे और वह सदा मन्द बुधि ही रहेगा ।

-ऐसे ही बच्चे क्रोधि, अहंकारी, जिद्दी बनते है ।

- बच्चो के मनोबल पर माता के संकल्पों का असर सब से ज्यादा होता हैं । बच्चे चाहे कैसे हो, नम्बर कम ला रहे हो, आप उन के प्रति मन में अच्छा सोचते रहो, तुम शांत हो, स्नेही हो, योग्य हो , एकाग्रचित्त हो, तुम फलाने कॉलेज में प्रोफेसर बनोगे, फलाने उद्योग में इंजिनियर बनोगे । आप के ये संकल्प उसे ऐसा ही बना देंगे ।

-बच्चे सफल नहीं हुये, बच्चे एवरेज रह गये, बच्चे मंद बुधि रह गये, बच्चे नालायक रह गये, इसके आप अलग अलग तर्क दे सकते हैं । परंतु गहराई में जाये तो कही ना कही घर के सदस्यों की ऐसी सोच उनके प्रति हैं, जिस कारण उन की दुर्दशा हुई हैं ।

-अगर मां और बाप बच्चो के प्रति सदा श्रेष्ट सोच रखे तो बच्चे वैसे ही बनेंगे जैसे आप सोच रहे हैं । माता की जुम्मेवरी सब से ज्यादा हैं । इस तरह बच्चो को लायक बना कर मनचाहा धन प्राप्त कर सकते हैं ।

-आप अपनी मानसिक एनर्जी बच्चो को हर पल देते रहो,वह ऐसे कमाल कर दिखायेगे जो आप ने कभी सोचा भी नहीं होगा । अगर आप हर समय नाकारात्मकता में लगे रहेंगे तो बच्चे वैसा ही परिणाम देंगे ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -414-मनोबल द्वारा अमीर बने -9

--पढ़ें और अमीर बने -1

-सही समय पर सही पुस्तक पढ़ने से आप का जीवन बदल सकता है ।

-एक अच्छी पुस्तक में एक अच्छे बैंक से ज्यादा सच्ची दौलत होती हैं ।

-अध्ययन में आपकी क्षमतायें उभारने का जितना सामर्थ्य हैं, उतना किसी अन्य गतिविधि में नहीं है ।

-सफेद कागज पर छपे काले अक्षरो में जीवन को बदल देने की महान शक्ति है ।

-जब भी हम अच्छी पुस्तकें पढ़ते है तो कायाकल्प करने वाली, प्रेरित करने वाली, जीवन बदल देने वाली किसी अनजान शक्ति का अहसास होता है ।

-अध्ययन के जरिये हम अपने संसार, अपने इतिहास और स्वयं को खोज लेते है ।

-अध्ययन हमें जितना बदलता और बेहतर बनाता है उतना अन्य कोई मानसिक गतिविधि नहीं बना सकती ।

-अध्ययन में इतनी शक्ति है कि यह हमें वर्तमान से आगे वहां पहुँचा सकता है, जो हम भविष्य में बन सकते है ।

-कोई सचमुच महान पुस्तक पढ़ना जीने का बेहतर तरीका सीखना है ।

-पढ़ने से बहुत सी चीजे बदल जाती है,समस्यायें सुलझाने का तरीका, जानकारी सहेजने का तरीका,कहानियाँ सुनाने का तरीका, संसार की व्यख्या करने का तरीका,और अपने बारे में सोचने का तरीका ।

-पढ़ने से हमारे मस्तिष्क की आकृति बदल जाती है ।

-अमीर बनना एक आसान और सशक्त कार्य से शुरू होता है । इसके लिये बस इतना ज़रूरी है कि आप कोई पुस्तक उठाये, उसे खोले और पढ़ना शुरू कर दे । बस हर रोज़ पढ़ना है । आप जीवन में ऐसी प्रगति कर जायेंगे जिस की आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी ।

-कई बार एक पुस्तक पढ़ने से ही किसी मनुष्य का भविष्य बन जाता है ।

-पुस्तकों का सब से बड़ा लाभ उनसे मिलने वाली प्रेरणा है ।

-वाक्य नुकीली कीलो की तरह होते है जो सत्य को हमारी स्मृति पर स्थायी रुप से अंकित कर देते है ।

-आप जो भी कार्य करते है, वह छोटा हो या बड़ा, या तो आपको अपने लक्ष्य के पास लें जा रहा है या उस से दूर लें जा रहा है ।

- हमारे चयन या तो हमें बेहतर बना रहे है या हमारी राह में बाधा डाल रहे है । बीच का कोई रास्ता नहीं है ।

-अच्छी पुस्तकों का चयन आप को महान और धनवान बना देगा ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -415-

मनोबल द्वारा अमीर बने -10

-पढ़े और अमीर बने -2

-कायाकल्प

-जो भी व्यक्ति पढ़ना जानता है, उसमे अपना विस्तार करने, अपनी जीवन शैली को कई तरीके से बहुगुणित करने और अपने जीवन को महत्वपूर्ण वा रोचक बनाने की शक्ति होती है ।

-जो लोग उत्सुक और आजीवन पाठक होते है, वे जीवन में आगे निकल जाते है । दूसरी ओर न्यूनतम पढ़ने वालो को न्यूनतम वेतन मिलता है या इस से भी बुरा हाल होता है ।

-जो लोग नहीं पढ़ सकते या नहीं पढ़ते वे गरीब बनेंगे जब की पाठक अमीर बनेंगे ।

- जो लोग पढ़ तो सकते है लेकिन पढ़ते नहीं, उनकी दशा अनपढ़ से ज्यादा खराब है ।

-खुद को बेहतर बनाने के लिये आप को पढ़ने के लिये समय तो निकालना ही होगा ।

- अब्राहम लिंकन जैसे अनेकों चतुर दासो ने बहुत विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पढ़ना सीखा । पढ़ने से ना सिर्फ उन्होने अपना जीवन बदल दिया बल्कि पूरे इतिहास की दिशा ही बदल दी ।

-लिंकन की मां पढ़ तो सकती थी परंतु उसने कभी लिखना नहीं सीखा । उनके पिता भी सिर्फ अपना नाम भर लिख सकते थे । लेकिन अब्राहम लिंकन का पुस्तकों के प्रति स्वभाविक रुझान था । सात वर्ष की उम्र में सप्ताह के दो दिन स्कूल जा कर अक्षरमाला सीखते थे ।

-किशोर अवस्था में 50 मील के दायरे में रहने वाले अपने हर पडोसी से पुस्तकें उधार मांग कर पढ डाली । उसे जब भी पुस्तक पढ़ने का मौका मिला, उन्होने उसका तुरंत लाभ उठाया । जब दूसरे बच्चे खेलने में वक्त जाया करते थे तब अब्राहमलिंकन वृक्ष के नीचे पुस्तक लेकर बैठ जाते थे । लंच के समय जब लोग झपकिया लेते थे वे पढ़ा करते थे ।

-उनके पढ़ने की गति तेज नहीं थी और ना ही उन्हे एक बार पढ़ने पर सब कुछ याद रहता था ।

-वे प्रायः लम्बे अंशों को बार बार लिखते थे ताकि वे उसे याद हो जाये और ज्यादा अच्छी तरह समझ में आ जाये ।

-ऐसे बहुत से स्त्री पुरुष हुये है जिन्होने पढ़ कर अपना काया कल्प किया और आगे चल कर महान पुरुष कहलाये ।

-पढ़ना श्रेष्ट नेता बनने की बुनियाद है । यह भी याद रहे हर पाठक लीडर नहीं होता लेकिन हर लीडर को पाठक होना चाहिये ।

-पुस्तकें इतिहास के सर्वश्रेष्ट चिंतकों का सर्वश्रेष्ट माध्यम रही है ।

-पुस्तकें अब भी विचारो की बुनियादी वाहक है ।

-एक मैनेजमेंट विशेषज्ञ, पूरे संसार की यात्रा करते रहते थे । वे हमेशा किसी ना किसी नई पुस्तक पर काम करते रहते थे । जिसमे अधिकतर बेस्ट सेलर होती थी । इसके बावजूद उन्हे हर दिन अलग अलग विषयों पर 3-5 घंटे पढ़ने का समय मिल जाता था ।

- वह हर कुछ साल बाद में कोई प्रमुख विषय उठाता था और तीन वर्षों तक उस पर हर दिन पढता था ।

-यह विशेषज्ञ बनने के लिये पर्याप्त नहीं होता लेकिन इससे उस क्षेत्र की बुनियादी जानकारी मिल जाती है ।

-आप का ज्ञान और आप का अनुभव ही आप की नई दौलत है ।

- अमीर बनने का मतलब सिर्फ अपने बैंक बेलेन्स को ही नहीं बल्कि ईशवर प्रदत्त योग्यताओ को बढाना भी है ।

-यही पढ़ने का जादू है । इसमे अद्भुत अंतर्ज्ञान के जरिये आप के जीवन का तुरंत कायाकल्प करने की शक्ति है । साथ ही इसमे संग्रहीत ज्ञान के जरिये क्रमिक कायाकल्प करने की शक्ति भी है । पढ़ने से आप ऐसे मायनों में विकास करेगें, जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -416

-मनोबल द्वारा अमीर बने -11

-पढे और अमीर बने -3

-पढ़ने में इतनी शक्ति है कि एक पुस्तक या एक वाक्य से भी आप का जीवन बदल सकता है ।

-लिखित शब्द बहुत शक्तिशाली होते है । इनमें आप को ठहरने और अपने जीवन की सही दिशा चुनने की प्रेरणा देने की असीम शक्ति होती है ।

-पढ़ने से आप का जीवन एक सेकेंड में बदल सकता है यह काम किसी दूसरे माध्यम से नहीं हो सकता ।

-यह किसी को पता नहीं होता कि कौन सी पुस्तक उसके जीवन को बदल कर रख देगी । इसलिये हमें लगातार पढ़ते रहना है ।

--हर दिन थोड़ा थोड़ा पढ़ कर आगे बढ़ने की कोशिश करें, बेशक आप सिर्फ एक वाक्य ही पढ़े ।

-यदि आप एक दिन में 15 मिनिट का समय निकालते है तो साल भर बाद आप को फर्क महसूस होगा ।

-संक्षेप में पढ़ना ही आप का वह छोटा सा निवेश है जो जीवन की पहेलियों या गुथिओ को सुलझाने में आप को मदद करेगा ।

-करोडो साक्षर लोगों में इतनी समझदारी नहीं है कि वह हर दिन 15 मिनिट या इस से ज्यादा पढ कर अमीर बन जाये ।

-हमारा जीवन दो तरीकों से बदलता है । जिन लोगों से हम मिलते है या पुस्तकें जो हम पढ़ते है ।

- यदि आप नये लोगों से नहीं मिल रहे है और नई पुस्तकें नहीं पढ़ रहे है तो इसका मतलब साफ है -आप ज़रा भी बदल नहीं रहे है । और अगर आप बदल नहीं रहे है तो आप प्रगति भी नहीं कर रहे है । यह इतनी ही सीधी सी बात है ।

-हर खुश और अमीर व्यक्ति पाठक नहीं होता और हर पाठक खुश और अमीर नहीं होता है । यह समान्य समझ की बात है ।

-यह भी रहस्य है कि पढ़ कर जीवन के सभी क्षेत्रों में समृद्ध बन सकते है ।

-घर में पुस्तकें होना और उन्हे ना पढ़ना तो वैसा ही है, जैसा कृषि युग में आप के हाथ में बीज हो, लेकिन आप उन्हे बो ही न रहे हो ।

-भविष्य उन्ही लोगों का है, जो सीखते है, जो सीखने की उन्हे जरूरत है, ताकि वे वह कर सकें, जो वे करना चाहते है ।

-ज्ञान कर्मी सधारण श्रमिको से बहुत ज्यादा शक्ति रखते है । इस लिये आप को ज्ञान पाने के लिये तैयार रहना चाहिये, और इसे अभी, इसी वक्त प्राप्त करें ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल-417

-मनोबल द्वारा अमीर बने -12

-पुस्तकों से ज्ञान की ग्रहणशीलता

-लोग पढ़ने और प्रगति करने के इरादे से पुस्तकें खरीदते तो हैं, लेकिन आधे लोग अपने इरादे पूरे नहीं करते और उन्हे पढ़ नहीं पाते ।

-अमीर बनने के लिये आपको जानकारी को पढ़ने और उसे जीवन में उतारने की भी जरूरत होती है ।

-तथ्य यह है कि पुस्तकें खरीदने भर से आप सिर्फ गरीब बनते है । अमीर तो आप पुस्तकें पढ़ने से बनते है ।

- लोग आज पहले से ज्यादा व्यस्त है । जीवन की व्यवस्ताये हावी हो जाती है । इससे पहले की उन्हे कुछ समझ आये सोने का समय हो जाता है और वे बुरी तरह थक जाते है ।

- आप हर दिन सिर्फ 15 मिनिट पढ़ कर अमीर बन सकते है ।

-हर दिन सिर्फ 15 मिनिट पढ़ने से आप एक महीने में एक पूरी पुस्तक पढ़ सकते है।

-यदि आप अपने पढ़ने के दैनिक समय को आधा घंटा कर दे तो आप एक साल में 25 पुस्तकें पड़ सकते है । तथ 10 वर्षों में 250 पुस्तकें पढ़ सकते है । बरतन धोने में जितना समय लगता है, उससे भी कम समय में इतना और कहां लाभ मिल सकता है ।

-जो कहते है उनके पास पढ़ने का समय नहीं है , समय तो है, परंतु अपने समय का उपयोग किसी ऐसे काम में कर रहे है, जिसे वे पढ़ने से ज्यादा महत्व देते है ।

- समय का यह छोटा सा निवेश विशाल लाभ बन जाता है बशर्ते वे अपने समय का निवेश करें और खुद को हर दिन पढ़ने के लिये अनुशासित करें ।

-ना पढ़ने के बहाने खोजने के बजाय आप पढ़ने के बहाने क्यों नहीं खोजते ।

-कुछ लोग इस बात की डींगें हांकते है कि उन्होने कहीं कोई प्रशिक्षण लिया । वे कहते है, यह तो मैने अपने आप ही सीखा है ।

-हकीकत यह है कि बुनियादी चीजे सीखने के लिये हमें समय निकलना ही पड़ता है और फिर बार बार उन्ही का अभ्यास करना पड़ता है ।

-पढ़ने से दिमाग को सिर्फ ज्ञान मिलता है, दरअसल पढी हुई चीज़ के बारे में सोच कर ही उसे हम अपना बनाते है ।

-किसी पुस्तक को गहराई से कैसे पढ़ा जाये ।

-सब से पहले पुस्तक का मुख पृष्ट और पीछे के कवर पर दिये गये सार को पढ़ना चाहिये । लेखक की जीवनी पढ़े ताकि आप समझ सके कि उस विषय में उसका कितना गहरा ज्ञान है ।

-प्रस्तावना और भूमिका पढ़े । इस से आप को पुस्तक के महत्वपूर्ण बिंदुओं का मूल्यवान ज्ञान मिल सकता है ।

-कुछ मिनिट तक विषय वस्तु की सारणी देखे । विषय वस्तु वाला पृष्ठ किसी पुस्तक का नक्शा होता है ।

-इसके बाद हर अध्याय की शुरुआत में लिखा शीर्षक पढ़े और शुरुआती पैराग्राफ पर स्क्रिँज्र डाले यदि अध्ययन में उपशीर्षक या हेडलाइन्स हैं तो उन्हे पढ़ लें ।

-यह प्रक्रिया आप को अनावश्यक लगा सकती है । लेकिन लेखक के संदेश को समझने या उसे चुकने में बहुत फर्क पड़ता है ।

-इस तरह पढ़ने से आप को 10-15 मिनिट तो लगते है लेकिन इस से आप को यह फायदा होता है कि पुस्तक के बारे में आप कि समझ बहुत ज्यादा बढ़ सकती है ।

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल 418

-मनोबल द्वारा अमीर बने -13

-पुस्तकें

-कुछ पुस्तकें स्वाद लेने के लिये होती है । कुछ निगलने के लिये । कुछ पुस्तकें चूसने, चबाने तथा पचाने के लिये होती है । हम लिखी हुई बातों को चूसते, चबाते और पचाते है।

-पढ़ते समय हाईलाइटर द्वारा मुख्य अंशों पर निशान लगाते रहा करो और मार्जिन में लिखते रहा करो ।

-एक आध सप्ताह में वह पुस्तक दुबारा उठाये और 10 मिनिट उसकी समीक्षा करें ।

-पुस्तक पलटते समय अपने नोट्स जो हाइलाइट कर रखे है उन्हे पढ़े । आप जब पढ़ेंगे तो वह सारा ज्ञान और समझ बाढ़ की तरह हमारे दिमाग में बहता चला जायेगा ।

-हर नया अध्ययन पाठक के पुराने अध्ययन की नींव बनता है ।

-जो पढ़ते है वह हमेशा बेहतर प्रदर्शन करते है ।

-ज्ञान में निवेश करने से सब से अच्छा ब्याज मिलता है ।

-आज जिन लोगों के पास ज्ञान या योग्यताओं की कमी है उनके लिये काम धंधे की कमी होती जा रही है ।

-हमारी जेलें कमजोर पठकों और निरक्षरों से भरी हुई है । जिन्होंने अपने क्रोध को गलत तरीके से बाहर निकाला ।

- उन्होने मादक द्रव्यों के सेवन से दूसरो को चोट पहुचा कर इस क्रोध को बाहर निकालने का विकल्प चुना ।

-अगर आप अपने फुरसत के समय का उपयोग पढ़ने और अमीर बनने में नहीं कर रहे है तो आप दूसरी दिशा में बढ़ रहे है ।

-पुस्तकों का व्यक्ति के जीवन में वही महत्व है जो सूर्य का पृथ्वी के लिये ।

-आप आज जैसे है, पांच साल बाद भी वैसे ही रहेंगे । केवल दो चीजो से फर्क पड़ेगा - आप किन लोगों से मिलते है और आप कौन सी पुस्तकें पढ़ते है ।

-कुछ लोग सोचते है कि अमीर लोगों के पास बाकी लोगों से कम समस्यायें होती है और यदि उनके पास पैसा होता, तो उनकी सारी समस्यायें गायब हो जाती ।

-परंतु यह सच्च नहीं है । अगर आप की सांस चल रही है, तो आप के पास समस्यायें हैं । जीवन इसी का नाम है - समस्याओं को पहचानना और सुलझाना । गरीब अमीर के पास एक समान समस्यायें है । जो पुस्तकें पढ़ते है वह अमीर बन जाते है ।

Wish You Happy Shiv Jayanti ji

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -420

-मनोबल द्वारा अमीर बने -15

-पढ़ने से दिव्य बल

-दिव्य शक्तियां दिमाग में सोई रहती है । ये जागृत नहीं होती जब तक पढ़ने लिखने की जटिल प्रक्रिया से ना गुजरा जाये । पढ़ने लिखने से हमारे दिमाग में ऐसे हार्मोन पैदा होते है जो बौधिक शक्तियों को जागृत कर देते है ।

-जब हमें मखन (घी) निकलना हो तो दही को बिलोना पड़ता । ऐसे ही अगर

हमें आध्यात्मिक शक्तियां प्राप्त करनी हो तो पढ़ना-लिखना रूपी मधानी प्रयोग करनी पड़ती है ।

-योगी भी अगर पढ़ने लिखने का कार्य नहीं करेगा तो वह उच्च दिव्य शक्ति सम्पन्न नहीं बनेगा । सिर्फ योग लगाता है और नई चीजे नहीं पढता तो उसका आन्तरिक विकास रुक जायेगा ।

-जिस समय हम लिखते है तो हमारा दिमाग अलग ढंग से सोचने लगता है । जब कि खाली समय कुछ ना कुछ व्यर्थ आता रहता है ।

-जो लोग सिर्फ सत्संग सुनते है,वीडियो देखते है, ऑडियो सुनते है और नाम मात्र पाठ की तरह मुरली पढ़ते है तो उन व्यक्तियों के दिमाग का विकास अलग ढंग से होता है । ऐसे लोग लकीर के फकीर होते है । सिर्फ मुरली ही पढ़नी है । सिर्फ गीता ही पढ़नी है । सिर्फ कुरान ही पढ़ना है ।

-ऐसे लोग परिवर्तन का विरोध करते है । उनका लक्ष्य नये सत्य खोजना या परम्परा को चुनौती देना नहीं होता, बल्कि इसे सुरक्षित रखना होता है ।

-ऐसे लोग उन मानसिक उपायों को सीख लेते है, जिनसे अगली पीढियों तक अपनी संस्कृति को हस्तांतरित कर सके ।

-मौखिक संस्कृति वाले लोगो की ज्यादातर बाते सूचियों, दोहराव, तुकबंदी, सूक्तियों, पुरानी कहावतों और बहादुर पूर्वजों की कहानीयों पर निर्भर होती है । ऐसे लोग खुद महान नहीं बनते सिर्फ महान लोगों के गुण गाते रहते है । हमारे पूर्वज ऐसे थे वैसे थे । ऐसे लोग कट्टरवादी होते है ।

-जब हम कोई बुक पढ़ते है तो विश्लेषण करते रहते है । हम लेखक के साथ सहमत या असहमत होते रहते है । हम आलोचना कर रहे होते है, मूल्यांकन कर रहे होते है, तुलना कर रहे होते है, चुनौती दे रहे होते है या स्पष्टीकरण दे रहे होते है । जो लोग नहीं पढ़ते वे इस प्रकार के मानसिक कसरत के झंझट में नहीं पड़ते और उन्हे सूक्ष्म शक्तियां प्राप्त नहीं होती ।

-केवल और केवल पढ़ने से हमारे मस्तिष्क की छिपी शक्तियां सक्रिय होती है । जब हम पढ़ते लिखते है तो तुरंत मन में स्थित ऐसे केन्द्र से काम करने लगते है, जिन से हमें उन मानसिक कार्यों को करने की शक्ति मिल जाती है, जिन्हे हम पहले नहीं कर सकते थे । फलस्वरूप हम अपनी मानवीय संभावना का अधिक दोहन कर सकते है । और जब हम अंदरूनी ईश्वर प्रदत्त क्षमता का अधिक इस्तेमाल करते है, तो समझ लीजिये हम ज्यादा समृध्द हो रहे है, अमीर बन रहे है ।

--यह जो मनुष्य को आलस्य आता है, काम टालने की आदत है, ईर्ष्या की आदत है, उत्साह से हीन रहने की आदत है, दूसरो को आगे बढ़ने से रोकने की आदत है, व्यर्थ विचारो की आदत है, पच्छाताप की आदत है, कुढने की आदत है, ये एक विशेष हार्मोन की कमी के कारण होता है । यह हार्मोन सिर्फ और सिर्फ हर रोज़ नया पढ़ने-लिखने और निरंतर योग से उत्पन्न होता है ।

-विपरीत लिंग के आकर्षण का कारण भी एक अति सूक्ष्म बल की कमी से होता है । इसे जीतने का बल हमें पढ़ने-लिखने और ध्यान साधना के बेलेन्स से प्राप्त होता है । अगर इन तीनो का बेलेन्स नहीं होगा तो ये आकर्षण होता रहेगा । जब भी आकर्षण का सूक्ष्म में खिंचाव हो तुरंत समझो तीनो में से कोई एक पलडा कमजोर हो गया है । तुरंत उसे ठीक करो । समस्याओं या काम के रोने नहीं रोते रहो । आप सब भगवान की सन्तानें है । भगवान के सूक्ष्म रहस्यों को खोजों सिर्फ रटत...

[9:23 AM, 12/12/2018] M. R. S. SAMSUNG: आन्तरिक बल -419

-मनोबल द्वारा अमीर बने -14

-पुस्तको का प्रभाव

-हम सभी ने हीन भावना महसूस की है ।हम सभी ने क्रोध महसूस किया है, लाचारी, चिंता, तनाव, हताशा और दुख महसूस किया है ।

-कई बार हम सभी खुद को अपने दिमाग के भीतर फँसा हुआ महसूस करते है और अपनी सच्ची भावनाओ को समझने या व्यक्त करने में असमर्थ होते है । ऐसे समय हम अकेलापन महसूस करते है । हम कुंठित हो जाते है ।

-ऐसी दशा में ध्यान योग में मन नहीं लगता, एकाग्रता नहीं बनती, मन हर समय परेशान रहने लगता है ।

-हम पुस्तकें पढ़ कर ऐसी परिस्थितियो से आराम से पार कर सकते है ।

-पुस्तकों के माध्यम से महान पुरुष हमारे से बात करते है ।वह अपने कीमती विचार हमें बताते है ।

-लिखित शव्दो में पाठक को भृष्ट करने और गरीब बनाने की भी उतनी ही शक्ति है जितना हमारे जीवन को सुखमय और अमीर बनाने की होती है । आप जो पढ़ते है वैसे ही बनते है इसलिये इस बारे में सतर्क रहें कि आप क्या पढ़ते है ।

-पढ़ना लिखना हमें स्वतंत्र बना देता है और हमारे मस्तिष्क को उसी प्रकार सक्रिय कर देता है जिस प्रकार कोई उत्प्रेरक निष्कृय रसायनिक घोल को सक्रिय कर देता है ।

- पढ़ना एक छेनी है । पढ़ने से हमारे खुरदरे कोने चिकने होते है और भीतर की कलाकृति प्रकट होती है ।

-जब हम पढ़ते है तो कोई ऐसी चीज़ होती है, जो दूसरे तरीकों से जानकारी प्राप्त करते समय नहीं होती ।

-पढ़ने में कोई छिपी शक्तियां है जो हमारा काया कल्प करती है, उस तरह दूसरी कोई चीज़ नहीं करती । ये शक्तियां हमें सभी क्षेत्रों में समृद्ध करती है ।

-जो चीज़ लिखी नहीं जाती है वह चाहे कितनी ही बुधिमतापूर्ण हो या गहरी हो, बिना उपयोग या बदलाव के कारण नष्ट हो जाती है ।

-कुछ महापुरुष कहते है कि वक्ता लिखित सामग्री से श्रेष्ट होता है । परंतु हकीकत यह है कि लिखित सामग्री ज्यादा शक्तिशाली होती है ।

-भाषण करने की सीमा होती है तथा व्यक्ति की मृत्यु के साथ ही उसका ज्ञान ख़त्म हो जाता है । परंतु बुक्स द्वारा हम अपना संदेश विश्व की हरेक आत्मा को दे सकते हैं । हम इस दुनियां से चले जायेंगे हमारे द्वारा लिखित पुस्तकें जब तक दुनियां है उसे प्रेरित करती रहेंगी ।

-लिखने पढ़ने से मानवीय क्षमता का विस्तार करने की शक्ति होती है, क्योंकि इस से हमारे सोचने के तरीके का कायाकल्प हो जाता है ।